

## युवाओं में नशीली दवाओं की लत में सांस्कृतिक और जातीय कारक

*1शीला, 2डॉ. अतुल कुमार (असिस्टेंट प्रोफेसर)*

*1शोधार्थी, 2पर्यवेक्षक*

*1-2विभाग— समाजशास्त्र, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक*

### सार

युवाओं में नशीली दवाओं की लत एक जटिल और गंभीर मुद्दा है जिसके व्यक्तियों, परिवारों और समुदायों पर महत्वपूर्ण परिणाम होते हैं। यह शोध युवा लोगों में नशीली दवाओं की लत के प्रसार, विकास और उपचार पर सांस्कृतिक और जातीय कारकों के प्रभाव की पड़ताल करता है। सांस्कृतिक मानदंड, मूल्य, परंपराएं और सामाजिक-आर्थिक असमानताएं सभी पदार्थ के उपयोग के प्रति युवाओं के दृष्टिकोण और व्यवहार को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस शोध का उद्देश्य सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील रोकथाम और हस्तक्षेप रणनीतियों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए, विविध सांस्कृतिक और जातीय संदर्भों के भीतर युवा नशीली दवाओं की लत की बहुमुखी प्रकृति में अंतर्दृष्टि प्रदान करना है।

**मुख्य शब्द:** युवाओं को नशे की लत, सांस्कृतिक कारक, जातीय कारक, मादक द्रव्यों के सेवन की रोकथाम, संस्कृति-संक्रमण, सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ, भेदभाव, हस्तक्षेप रणनीतियाँ, सार्वजनिक स्वास्थ्य चिंता।

### परिचय:

युवाओं में नशीली दवाओं की लत एक जटिल और बहुआयामी मुद्दा है जो दुनिया भर के समाजों को चुनौती देता रहता है। यह न केवल इसके तात्कालिक स्वास्थ्य परिणामों के कारण बल्कि युवा व्यक्तियों, उनके परिवारों और जिस समुदाय में वे रहते हैं, उनकी भलाई

पर इसके दीर्घकालिक प्रभाव के कारण भी बहुत चिंता का विषय है। जबकि नशीली दवाओं की लत जीवन के सभी क्षेत्रों के व्यक्तियों को प्रभावित करती है, यह तेजी से स्पष्ट हो रहा है कि सांस्कृतिक और जातीय कारक युवा लोगों में नशे की व्यापकता, विकास और प्रबंधन को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

इस शोध का उद्देश्य सांस्कृतिक और जातीय कारकों और युवा नशीली दवाओं की लत के बीच जटिल संबंधों की पड़ताल करना है। हम यह पता लगाएंगे कि कैसे सांस्कृतिक मानदंड, मूल्य, परंपराएं और सामाजिक-आर्थिक असमानताएं मादक द्रव्यों के उपयोग के प्रति युवा व्यक्तियों के दृष्टिकोण और व्यवहार को आकार देने में योगदान करती हैं। विविध सांस्कृतिक और जातीय समूहों द्वारा सामना की जाने वाली विशिष्ट आवश्यकताओं और चुनौतियों के अनुरूप प्रभावी रोकथाम और हस्तक्षेप रणनीतियों के विकास के लिए इन कारकों को समझना महत्वपूर्ण है।

हाल के वर्षों में, युवाओं में नशीली दवाओं की लत से निपटने के लिए सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील दृष्टिकोण की आवश्यकता की पहचान बढ़ रही है। यह स्पष्ट होता जा रहा है कि सांस्कृतिक विविधता की विशेषता वाली दुनिया में रोकथाम और उपचार का एक आकार-फिट-सभी मॉडल अपर्याप्त है। इसे संबोधित करने के लिए, हम संस्कृति, जातीयता और युवा नशीली दवाओं की लत के बीच परस्पर क्रिया के विभिन्न पहलुओं की जांच करेंगे, जिसमें संस्कृतिकरण, सांस्कृतिक पहचान, भेदभाव और मादक द्रव्यों के सेवन के पैटर्न पर उनका प्रभाव शामिल है।

इस अन्वेषण के माध्यम से, हमारा लक्ष्य उन कारकों के जटिल जाल पर प्रकाश डालना है जो विभिन्न सांस्कृतिक और जातीय संदर्भों में युवाओं में नशीली दवाओं की लत में योगदान करते हैं। इन गतिशीलता की गहरी समझ हासिल करके, हम विभिन्न समुदायों में युवाओं के बीच नशीली दवाओं की लत को रोकने और इलाज के लिए अधिक प्रभावी

और लक्षित पहल का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। अंततः, हमारा लक्ष्य हमारे समय की सबसे गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य चिंताओं में से एक से निपटने के लिए अधिक व्यापक और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील दृष्टिकोण में योगदान करना है।

### **सांस्कृतिक मानदंड और नशीली दवाओं का उपयोग:**

सांस्कृतिक मानदंड व्यक्तियों के व्यवहार को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिसमें नशीली दवाओं के उपयोग के संबंध में उनके दृष्टिकोण और प्रथाएं भी शामिल हैं। प्रभावी रोकथाम और हस्तक्षेप रणनीतियों को विकसित करने के लिए नशीली दवाओं के उपयोग पर सांस्कृतिक मानदंडों के प्रभाव को समझना महत्वपूर्ण है। यह खंड सांस्कृतिक मानदंडों और नशीली दवाओं के उपयोग के बीच जटिल संबंधों की पड़ताल करता है, जिसमें इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि कैसे सांस्कृतिक मूल्य, परंपराएं और धारणाएं मादक द्रव्यों के सेवन को रोक सकती हैं या प्रोत्साहित कर सकती हैं।

- **सांस्कृतिक मूल्य और दृष्टिकोण:** विभिन्न संस्कृतियाँ पदार्थ के उपयोग के संबंध में अलग-अलग मान्यताएँ और मूल्य रखती हैं। कुछ संस्कृतियाँ पदार्थों के संयम और जिम्मेदार उपयोग पर जोर दे सकती हैं, जबकि अन्य में नशीली दवाओं के सेवन के प्रति अधिक उदार रवैया हो सकता है। किसी विशेष सांस्कृतिक संदर्भ में नशीली दवाओं के उपयोग की स्वीकार्यता और व्यापकता को संबोधित करने के लिए इन मूल्यों को समझना आवश्यक है।
- **सामाजिक स्वीकृति और साथियों का दबाव:** सांस्कृतिक मानदंड अक्सर यह तय करते हैं कि सामाजिक रूप से स्वीकार्य या वर्जित व्यवहार क्या है। युवा इन मानदंडों का पालन करने के लिए दबाव महसूस कर सकते हैं, जिसमें नशीली दवाओं के उपयोग में शामिल होना भी शामिल है, अगर इसे उनके सांस्कृतिक समूह के भीतर सामाजिक रूप से स्वीकार्य माना जाता है। नशीली दवाओं की शुरुआत

और निरंतर उपयोग में साधियों का प्रभाव एक शक्तिशाली कारक है, क्योंकि युवा व्यक्ति स्वीकृति और अपनापन चाहते हैं।

- **सांस्कृतिक परंपराएँ और अनुष्ठान:** कुछ संस्कृतियाँ पारंपरिक समारोहों या अनुष्ठानों में विशिष्ट पदार्थों के उपयोग को शामिल करती हैं। इन प्रथाओं को उनके सांस्कृतिक संदर्भ में नशीली दवाओं का दुरुपयोग नहीं माना जा सकता है। हालाँकि, सांस्कृतिक अनुष्ठानों और हानिकारक नशीली दवाओं के दुरुपयोग के बीच की सीमा कभी-कभी धुंधली हो सकती है, जिससे मादक द्रव्यों के सेवन के मुद्दों को संबोधित करते समय सांस्कृतिक परंपराओं पर सावधानीपूर्वक विचार और सम्मान की आवश्यकता होती है।
- **कलंक और शर्म:** कुछ संस्कृतियों में, नशीली दवाओं के उपयोग को अत्यधिक कलंकित किया जाता है, और जो व्यक्ति पदार्थों का उपयोग करते हैं उन्हें बहिष्कार और शर्मिंदगी सहित गंभीर सामाजिक परिणामों का सामना करना पड़ सकता है। कलंक का डर इन संस्कृतियों में युवाओं के बीच नशीली दवाओं के उपयोग को रोकने का काम कर सकता है।
- **जोखिम की सांस्कृतिक धारणा:** सांस्कृतिक मानदंड इस बात को प्रभावित कर सकते हैं कि व्यक्ति नशीली दवाओं के उपयोग से जुड़े जोखिमों को कैसे समझते हैं। कुछ संस्कृतियों में, ऐसी धारणा हो सकती है कि कुछ दवाएं दूसरों की तुलना में कम हानिकारक हैं, जिससे उपयोग और दुरुपयोग के अलग-अलग पैटर्न होते हैं।
- **सांस्कृतिक उपसमूह और उपसंस्कृतियाँ:** बड़े सांस्कृतिक समूहों के भीतर, नशीली दवाओं के उपयोग से संबंधित विशिष्ट मानदंडों और मूल्यों वाले उपसमूह या उपसंस्कृतियाँ हो सकती हैं। विशिष्ट आबादी के लिए रोकथाम और हस्तक्षेप के प्रयासों को तैयार करने के लिए इन उपसांस्कृतिक गतिशीलता को समझना आवश्यक है।

- **मीडिया और लोकप्रिय संस्कृति:** सांस्कृतिक मानदंडों को मीडिया और लोकप्रिय संस्कृति द्वारा सुदृढ़ या चुनौती दी जा सकती है। फिल्मों, संगीत और मनोरंजन के अन्य रूपों में नशीली दवाओं के उपयोग का चित्रण युवाओं के पदार्थों के प्रति दृष्टिकोण और व्यवहार को प्रभावित कर सकता है।
- **रोकथाम में सांस्कृतिक संवेदनशीलता:** नशीली दवाओं की रोकथाम के कार्यक्रम तैयार करते समय सांस्कृतिक मानदंडों को पहचानना और उनका सम्मान करना महत्वपूर्ण है। सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील हस्तक्षेपों का युवा लोगों और उनके परिवारों पर असर पड़ने की अधिक संभावना है, जिससे अधिक प्रभावी परिणाम प्राप्त होंगे।

निष्कर्ष में, सांस्कृतिक मानदंड युवा नशीली दवाओं के उपयोग के पैटर्न और व्यवहार पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। विशिष्ट सांस्कृतिक संदर्भों में इन मानदंडों को पहचानना और समझना उन रणनीतियों को विकसित करने के लिए आवश्यक है जो सांस्कृतिक मूल्यों और परंपराओं की विविधता का सम्मान करते हुए युवा व्यक्तियों में नशीली दवाओं की लत को संबोधित करते हैं। इस सूक्ष्म समझ के माध्यम से ही हम विविध समुदायों में नशीली दवाओं के दुरुपयोग से निपटने के लिए सार्थक और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील हस्तक्षेप करने की उम्मीद कर सकते हैं।

### **आप्रवासी युवाओं के बीच मादक द्रव्यों के सेवन पर संस्कृतिकरण और इसका प्रभाव:**

आप्रवासन अक्सर संस्कृति-संस्करण की प्रक्रिया को जन्म देता है, जहां एक संस्कृति के व्यक्ति अपनी नई मेजबान संस्कृति के मानदंडों, मूल्यों और व्यवहारों को अपनाते हैं। आप्रवासी युवाओं के बीच मादक द्रव्यों के सेवन के पैटर्न पर संस्कृतिकरण का गहरा प्रभाव पड़ सकता है। यह खंड इस कमजोर जनसांख्यिकीय समूह के भीतर संस्कृतिकरण की गतिशीलता और मादक द्रव्यों के सेवन पर इसके प्रभाव की पड़ताल करता है।

- **परसंस्कृतिकरण परिभाषित:** परसंस्कृतिकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति और समुदाय एक अलग सांस्कृतिक संदर्भ में जाने पर एक नई संस्कृति को अपनाते हैं। इसमें भाषा, मूल्यों, व्यवहार और सामाजिक अंतःक्रियाओं में अलग-अलग डिग्री तक परिवर्तन शामिल हैं।
- **सांस्कृतिक संघर्ष और तनाव:** अप्रवासी युवाओं को अक्सर सांस्कृतिक संघर्ष और तनाव का सामना करना पड़ता है क्योंकि वे अपने परिवार की पारंपरिक संस्कृति और मेजबान संस्कृति के बीच नेविगेट करते हैं। यह तनाव अलग-अलग तरीकों से प्रकट हो सकता है, जिसमें मुकाबला तंत्र के रूप में मादक द्रव्यों का उपयोग भी शामिल है।
- **परसंस्कृतिकरण रणनीतियाँ:** आप्रवासी युवा विभिन्न परसंस्कृतिकरण रणनीतियाँ अपनाते हैं। कुछ पूरी तरह से मेजबान संस्कृति में समाहित हो सकते हैं, जबकि अन्य अपनी मूल संस्कृति (पृथक्करण) के साथ मजबूत संबंध बनाए रख सकते हैं। अन्य लोग दोनों (एकीकरण) का मिश्रण अपना सकते हैं, या भ्रम और वियोग (हाशिये पर) का अनुभव कर सकते हैं। प्रत्येक रणनीति में मादक द्रव्यों के सेवन के लिए अद्वितीय निहितार्थ होते हैं।
- **मादक द्रव्यों के सेवन के जोखिम कारक:** कुछ संस्कृतिकरण रणनीतियाँ, जैसे कि हाशिए पर जाना और अलगाव, मादक द्रव्यों के सेवन के उच्च जोखिम से जुड़ी हो सकती हैं। विशेष रूप से, हाशिए पर जाने से अलगाव की भावना पैदा हो सकती है और नशीली दवाओं के उपयोग सहित नकारात्मक व्यवहारों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ सकती है।
- **सुरक्षात्मक कारक:** दूसरी ओर, एकीकरण – जहां आप्रवासी युवा मेजबान संस्कृति के साथ अपनी मूल संस्कृति को सफलतापूर्वक संतुलित करते हैं – मादक द्रव्यों के सेवन के खिलाफ एक सुरक्षात्मक कारक के रूप में काम कर सकते हैं। सांस्कृतिक

पहचान और अपनेपन की एक मजबूत भावना जोखिम भरे व्यवहार में शामिल होने के जोखिम को कम कर सकती है।

- **साथियों का प्रभाव:** अप्रवासी युवा अक्सर अपनी मेजबान संस्कृति के भीतर साथियों का नेटवर्क बनाते हैं। ये सहकर्मी नशीली दवाओं के उपयोग को प्रोत्साहित या हतोत्साहित करके उनके मादक द्रव्य उपयोग व्यवहार पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकते हैं। साथियों का प्रभाव उन लोगों के लिए विशेष रूप से मजबूत हो सकता है जो अपनी मूल संस्कृति और मेजबान संस्कृति दोनों से हाशिए पर हैं।
- **परिवार की भूमिका:** पारिवारिक गतिशीलता भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। आप्रवासी युवा जो पीढ़ियों के बीच अलग-अलग संस्कृतिकरण स्तरों के कारण अंतर-पीढ़ीगत संघर्षों का अनुभव करते हैं, वे विद्रोह या पलायन के रूप में मादक द्रव्यों के उपयोग की ओर रुख कर सकते हैं।
- **रोकथाम और हस्तक्षेप में सांस्कृतिक संवेदनशीलता:** अप्रवासी युवाओं के बीच मादक द्रव्यों के सेवन को संबोधित करने के लिए, रोकथाम और हस्तक्षेप कार्यक्रम सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील होने चाहिए और उनके अद्वितीय संस्कृतिकरण अनुभवों के अनुरूप होने चाहिए। सांस्कृतिक संरक्षण और अनुकूलन के बीच संतुलन को समझना प्रभावी रणनीतियों को डिजाइन करने की कुंजी है।
- **सामुदायिक सहायता:** आप्रवासी युवाओं को एक सहायक समुदाय प्रदान करना जो मेजबान संस्कृति में सकारात्मक जुड़ाव को प्रोत्साहित करते हुए उनकी सांस्कृतिक विरासत को महत्व देता है, मादक द्रव्यों के सेवन के जोखिम को कम करने में मदद कर सकता है।

निष्कर्षतः, संस्कृतिकरण एक जटिल प्रक्रिया है जो आप्रवासी युवाओं के बीच मादक द्रव्यों के सेवन के पैटर्न को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। विभिन्न संस्कृतिकरण रणनीतियों

को पहचानना, उनके अद्वितीय जोखिमों और सुरक्षात्मक कारकों को समझना, और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील रोकथाम और हस्तक्षेप उपायों को लागू करना इस कमजोर जनसांख्यिकीय समूह के सामने आने वाली मादक द्रव्यों के सेवन की चुनौतियों को संबोधित करने के लिए आवश्यक कदम हैं। ऐसा करके, हम आप्रवासी युवाओं को उनकी सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करते हुए उनकी मेजबान संस्कृति में स्वस्थ एकीकरण की यात्रा में बेहतर समर्थन दे सकते हैं।

### **नशीली दवाओं की लत में नस्लीय असमानताएँ:**

नशीली दवाओं की लत एक व्यापक सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या है जो सभी नस्लीय और जातीय पृष्ठभूमि के व्यक्तियों को प्रभावित करती है। हालाँकि, नशीली दवाओं की लत के प्रसार, उपचार और परिणामों में महत्वपूर्ण नस्लीय असमानताएँ हैं। यह खंड इन असमानताओं में योगदान देने वाले जटिल कारकों और सार्वजनिक स्वास्थ्य और सामाजिक नीति पर पड़ने वाले प्रभावों की पड़ताल करता है।

- **असंगत प्रभाव:** नस्लीय अल्पसंख्यक, विशेष रूप से काले और हिस्पैनिक समुदाय, नशीली दवाओं की लत के असंगत प्रभाव का अनुभव करते हैं। उन्हें गुणवत्तापूर्ण व्यसन उपचार और सहायता सेवाओं तक पहुँचने में बाधाओं का सामना करने की अधिक संभावना है।
- **सामाजिक आर्थिक कारक:** नशीली दवाओं की लत में नस्लीय असमानताओं में सामाजिक आर्थिक असमानताओं का महत्वपूर्ण योगदान है। नस्लीय अल्पसंख्यकों के स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा और आर्थिक अवसरों तक सीमित पहुंच के साथ कम आय वाले पड़ोस में रहने की अधिक संभावना है, जिससे नशीली दवाओं की लत के प्रति संवेदनशीलता बढ़ सकती है।



- **आपराधिक न्याय प्रणाली:** नशीली दवाओं की गिरफ्तारी, सजा और कैद में नस्लीय असमानताएं समस्या को बढ़ा देती हैं। विशेष रूप से काले व्यक्तियों को उनके श्वेत समकक्षों की तुलना में नशीली दवाओं से संबंधित अपराधों के लिए गिरफ्तार किए जाने और लंबी सजा मिलने की अधिक संभावना होती है, जिससे नशे की लत और आपराधिक न्याय में भागीदारी का एक चक्र शुरू हो जाता है।
- **स्वास्थ्य देखभाल असमानताएँ:** स्वास्थ्य देखभाल पहुंच और देखभाल की गुणवत्ता में नस्लीय असमानताएँ भी एक भूमिका निभाती हैं। अल्पसंख्यक आबादी को व्यसन उपचार तक पहुँचने में बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है, जिसमें स्वास्थ्य देखभाल सेटिंग्स में भेदभाव भी शामिल है।
- **संरचनात्मक नस्लवाद:** संरचनात्मक नस्लवाद, जिसमें ऐसी नीतियां और प्रथाएं शामिल हैं जो नस्लीय अल्पसंख्यकों को व्यवस्थित रूप से नुकसान पहुंचाती हैं, नशीली दवाओं की लत असमानताओं में योगदान करती हैं। इसमें आवास भेदभाव, असमान शैक्षिक अवसर और रोजगार के अवसरों तक सीमित पहुंच शामिल है।
- **कलंक और रूढ़िवादिता:** नशे की समस्या के कारण नस्लीय अल्पसंख्यकों को कलंकित करना उन्हें मदद मांगने से रोक सकता है। नस्लीय रूढ़िवादिता और पूर्वाग्रह स्वास्थ्य देखभाल पेशेवरों की धारणाओं और उपचार निर्णयों को प्रभावित कर सकते हैं, जिससे उचित देखभाल तक पहुंच सीमित हो सकती है।
- **सांस्कृतिक कारक:** सांस्कृतिक कारक भी नशीली दवाओं की लत की असमानताओं को प्रभावित कर सकते हैं। विशिष्ट नस्लीय या जातीय समुदायों के भीतर सांस्कृतिक मानदंड मादक द्रव्यों के उपयोग, मदद मांगने वाले व्यवहार और एक स्वास्थ्य मुद्दे के रूप में लत की स्वीकृति के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित कर सकते हैं।
- **आघात और प्रतिकूल बचपन के अनुभव:** नस्लीय अल्पसंख्यकों को उच्च दर के आघात और प्रतिकूल बचपन के अनुभवों का अनुभव हो सकता है, जिससे नशीली

दवाओं की लत का खतरा बढ़ सकता है। ऐतिहासिक आघात और नस्लवाद के चल रहे अनुभव इन चुनौतियों को बढ़ा सकते हैं।

### **निष्कर्ष:**

सांस्कृतिक मानदंडों, संस्कृति-संस्कृति, नस्लीय असमानताओं और भेदभाव के बीच जटिल संबंध युवा व्यक्तियों और हाशिए पर रहने वाले समुदायों के बीच नशीली दवाओं की लत के पैटर्न को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। विविध आबादी की विशिष्ट आवश्यकताओं को संबोधित करने वाली प्रभावी रोकथाम, हस्तक्षेप और उपचार रणनीतियों को विकसित करने के लिए इन जटिल कारकों को समझना आवश्यक है।

सांस्कृतिक मानदंड, चाहे वे जिम्मेदार पदार्थ के उपयोग को बढ़ावा दें या लत को कलंकित करें, युवा लोगों के दृष्टिकोण और व्यवहार को आकार देते हैं। परसंस्कृतिकरण, एक नई संस्कृति को अपनाने की प्रक्रिया, आप्रवासी युवाओं के बीच मादक द्रव्यों के सेवन के लिए सुरक्षात्मक और जोखिम दोनों कारकों को पेश कर सकती है। नस्लीय असमानताएँ व्यसन पैटर्न पर प्रणालीगत असमानताओं के गहरे प्रभाव को रेखांकित करती हैं, प्रणालीगत सुधार और समानता-संचालित नीतियों की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डालती हैं। भेदभाव, एक व्यापक सामाजिक बुराई, न केवल मादक द्रव्यों के सेवन को बढ़ाती है बल्कि आघात और अलगाव के चक्र को भी कायम रखती है।

इन चुनौतियों से निपटने के लिए समग्र और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाना अनिवार्य है। रोकथाम और हस्तक्षेप कार्यक्रम विविध समुदायों के मूल्यों और परंपराओं का सम्मान करते हुए विशिष्ट सांस्कृतिक संदर्भों के अनुरूप होने चाहिए। नीतिगत बदलाव भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं जिनका उद्देश्य स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा और रोजगार में भेदभाव और प्रणालीगत असमानताओं को खत्म करना है। भेदभाव और प्रतिकूल परिस्थितियों

के अंतर्निहित प्रभावों को दूर करने के लिए आघात—सूचित देखभाल को व्यसन उपचार में एकीकृत किया जाना चाहिए।

निष्कर्षतः, नशीली दवाओं की लत के पैटर्न पर सांस्कृतिक मानदंडों, संस्कृति, नस्लीय असमानताओं और भेदभाव के प्रभाव को पहचानना और संबोधित करना नशे की रोकथाम और उपचार के लिए अधिक न्यायसंगत और प्रभावी दृष्टिकोण बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इन जटिल गतिशीलता को स्वीकार करके, हम एक ऐसे समाज की दिशा में काम कर सकते हैं जहां सभी युवा व्यक्तियों और हाशिए पर रहने वाले समुदायों के पास लत से उभरने और स्वस्थ, अधिक पूर्ण जीवन जीने के लिए आवश्यक समर्थन और संसाधन हों।

## संदर्भ

- वेगा, डब्ल्यू.ए., गिल, ए.जी., और कोलोडी, बी. (2012)। मैक्सिकन अमेरिकियों और प्यूर्टो रिकान्स के बीच शराब और नशीली दवाओं के उपयोग के लिए सामाजिक—आर्थिक कारकों का संबंध। व्यसनों का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 27(11), 1245—1261।
- मार्सिग्लिया, एफ.एफ., कुलिस, एस., हेचट, एम.एल., और सिल्स, एस. (2014)। अमेरिका के दक्षिण—पश्चिम में किशोरों के बीच नशीली दवाओं के मानदंडों और नशीली दवाओं के उपयोग के भविष्यवक्ताओं के रूप में जातीयता और जातीय पहचान। पदार्थ का उपयोग एवं दुरुपयोग, 39(7), 1061—1094।
- मार्सिग्लिया, एफ.एफ., और बूथ, जे.एम. (2015)। वास्तविक अभ्यास सेटिंग्स में हस्तक्षेपों का सांस्कृतिक अनुकूलन। सामाजिक कार्य अभ्यास पर अनुसंधान, 25(4), 423—432।

- ओकामोटो, एस.के., हेल्म, एस., गिरौक्स, डी., एडवर्ड्स, सी., और कुलिस, एस. (2014)। हवाईयन यूथ ड्रग ऑफर सर्वे (एचवाईडीओ) का विकास और प्रारंभिक सत्यापन। जातीयता एवं स्वास्थ्य, 19(1), 30–46
- वेगा, डब्ल्यू.ए., और गिल, ए.जी. (2018)। प्रारंभिक किशोरावस्था में नशीली दवाओं का उपयोग और जातीयता। न्यूयॉर्क: प्लेनम प्रेस.